Executive Summary of the Report of the Minor Research Project submitted to the University Grants Commission, South West Regional Office, Bangalore by Dr. Jenu Mary Mathews, Department of Hindi, St. Thomas College, Kozhencherry- 689 641

THULANATHMAK ADHYAYAN KI DRISHTI SE PANI KE PRACHIR AUR CHEMMEEN MEM ABHIVYAKTH AANCHALIKATHA

Dr. Jenu Mary Mathews

UGC Approval Letter No & Date : F. MRP/12th Plan/14-15/KLMGO22 dtd 10.12.2014

भारतीय साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की प्रदीर्घ परंपरा रही है| भारतीय भाषा सेतु होने के कारण हिन्दी भाषा और साहित्य का दाय इस दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा है| आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्यिक वैशिष्ट्य को तो इससे समझा ही गया है| साहित्य समाज का यात्री होता है, सामाजिक व्यवहार विचार का दर्पण होता है| इसलिए सामाजिक जीवन विशेषकर भारत जैसे बहुभाषा-भाषी समाज को समझने के लिए इससे बेहत्तर और कोई माध्यम हो. ही. नहीं सकता| जीवन के कटु-मधु अनुभवों को साझा करने का एकमात्रा ज़रिया है साहित्य और इसे परखने पहचानने का एकमात्र तरीका है- साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन| हिन्दी और मलयालम साहित्य में उपन्यास वह महत्वपूर्ण कडी है जिसके माध्यम से दोनों भाषाएँ और साहित्य ही नहीं, समाज भी जुडते हैं, एक दूसरे के वैचारिक दुनिया में आवाजाही करते हैं, प्रेरणा और प्रभाव ग्रहण करते हैं| जीवन का सर्वांग निरूपण यहाँ संभव होता है|

डॉ. रामदरश मिश्रजी और तकळि शिवशंकर पिल्लै जी दोनों ने अपने साहित्य के द्वारा जीवन मूल्यों को महत्व दिया और यही मूल्य समाज का आदर्श तथा जीवन-दर्शन बने| दोनों की उपलिब्धयों की बात आती तो इनकी सार्थकता पर आज तक कोई संदेह नहीं किया जा सकता| वैसे तो निरुद्देश्य साहित्य की रचना कोई भी नहीं करता, फिर भी आलोच्य दोनों उपन्यासकारों ने सामाजिक विषमताओं, राजनीतिक संघर्षों, धार्मिक आन्दोलन और अन्य अनेक समस्याओं को सामने रखते हुए शोषित और शोषकों की समस्या को प्रस्तुत किया है| ग्रामीण जीवन का चित्रण करते समय आश्चर्यजनक सुन्दर देहाती भाषा का प्रयोग किया| जीवन भर निर्धनता को झेलते हुए विपन्नता का जीवन बिताने वाले कृषकों और मछुवारों का चित्रण सजीव रूप से दोनों साहित्यकारों ने किया| दोनों ने दीन-हीन दलितों के दुःख को समझा और उसे दूर करने का प्रयास भी किया| इसलिए दोनों आलोच्य साहित्यकारों और उनके उपन्यासों जन-मन में लोकप्रिय हुआ| अपने युग-चेतना से उन्होंने प्रेरणा पाया|

आलोच्य उपन्यासकारों के दोनों उपन्यास पानी के प्राचीर और चेम्मीन लोककल्याण और लोकमंगल की भावना से प्रचलित हैं| इसलिए दोनों के आलोच्य उपन्यास साँस्कृतिक पुनर्जागरण तथा समन्वयवादी भावनाओं का परिचालक है| समन्वय की प्रवृत्ति के कारण उन्होंने नवीन जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा की| आलोच्य उपन्यासकारों के उपन्यास 'स्वर्ण युग' बनकर सामने आता है| इन्होंने उपन्यासों को एक भूमिका दी और अपनी-अपनी भाषाओं के साहित्य भवन के दृढ़ कीर्ति -स्तंभ| तुलनात्मक अध्ययनका उद्देश्य को लेकर अध्ययन करने पर मालूम हुआ कि भारत के सभी श्रेष्ठ भाषाओं के साहित्यों की मूलभूत एकता रेखांकित करने लायक है इस दृष्टि से कहा जा सकता है आलोच्य लेखकों ने उपन्यासों को मृत संजीवनी प्रदान की| दोनों ने अपने युग की समस्याओं को चित्रित किया और समाधान भी प्रस्तुत किए| विचारों और नैतिक दृष्टिकोण को देखते हुए आलोच्य दोनों उपन्यासकार एवं उनके आलोच्य उपन्यास एक दूसरे के निकट हैं|